पाठ्यक्रम (242)

हिंदुस्तानी संगीत

माध्यमिक स्तर

प्राचीन काल से संगीत प्रसन्नता, दु:ख, विश्रांति आदि विभिन्न मनोदशाओं की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। कला के अन्य स्वरूपों की तुलना में संगीत सबसे प्राकृतिक और सहज स्वाभाविक माध्यम है क्योंकि यह प्राण अथवा आत्मा से संबंधित है। भारतीय संस्कृति और परंपरा में संगीत भारतीय मानस से अनिवार्य रूप से जुड़ा हुआ है क्योंकि यह जीवन के प्रत्येक पहलू और मानव-समाज में गहराई से संबद्ध है। सारे ब्रह्मांड में व्याप्त नाद और लय के साथ मनुष्य का एक प्राकृतिक जुड़ाव है क्योंकि यही संगीत के मूल तत्वों का निर्माण करते हैं। यही मुख्य कारण है कि वेदों और प्रमुख रूप से सामवेद में मंत्रों के उच्चारण के लिए संगीत को सर्वोत्तम माध्यम माना गया है।

उद्देश्य (Objective)

यह संगीत का पाठ्यक्रम हिंदुस्तानी संगीत के सिद्धांत और प्रयोगात्मक ज्ञान को अच्छे ढंग से प्रदान करता है।

साधारण उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम का अध्ययन करने के बाद आप:–

- भारतीय संगीत के इतिहास एवं विभिन्न तकनीकी शब्दों के बारे में वर्णन कर सकेंगे;
- संगीत के क्षेत्र में विभिन्न संगीतज्ञों के योगदान को प्रस्तुत कर सकेंगे;
- स्वर एवं ताल को समझा सकेंगे।

विशेष उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के पश्चात् आप:-

- शास्त्रीय तथा सुगम संगीत के महत्वपूर्ण तत्वों का वर्णन कर सकेंगे;
- दिए हुए तकनीकों शब्दों को पारिभाषिक रूप से प्रस्तुत कर सकेंगे;
- दिए हुए राग एवं तालों को पहचान कर उनका प्रयोग कर सकेंगे;
- बंदिशों के रूपों का वर्णन कर सकेंगे;
- बंदिशों की स्वरलिपि लिख सकेंगे।

योग्यता

- इस पाठ्यक्रम के लिए माध्यमिक अथवा उसके समान परीक्षा में उत्तीर्ण होना आवश्यक है।
- वे शिक्षार्थी जो संगीत में रुचि रखते हैं।

प्रस्तुति विधि (Delivery Method)

इस पाठ्यक्रम को मुद्रित सामग्री के साथ ऑडियो कैसेट या सीडी के द्वारा प्रदान किया गया है।

समयावधि (Time Frame)

यह एक शैक्षिक पाठ्यक्रम है। यह पाठ्यक्रम एक वर्ष का होगा जिसे पांच वर्ष तक बढ़ाया जा सकता है। इसका अर्थ है कि इस पाठ्यक्रम को एक वर्ष में पूरा किया जा सकता है लेकिन मुक्त शिक्षा प्रणाली इस पाठ्यक्रम को पांच वर्ष में पूरा करने की सहूलियत अथवा लचीलापन भी प्रदान करती है।

परीक्षा की विधि (Scheme of Examination)

संपूर्ण अंक : 100

सिद्धांत : 40 अंक तथा प्रायोगिक : 60 अंक

पाठ्यक्रम संरचना (Course Structure)

प्रत्येक मॉड्यूल में सिद्धांत और प्रायोगिक परीक्षा के न्यूनतम अध्ययन के घंटे और निर्धारित अंक निम्न प्रकार हैं–

मॉड्यूल सं.	मॉड्यूल का नाम	न्यूनतम अध्ययन के घंटे	अंक
सिद्धांत			
I.	सामान्य संगीत-शास्त्र	48	20
II.	हिंदुस्तानी संगीत का इतिहास (प्राचीन एवं मध्यकालीन)	36	10
III.	हिंदुस्तानी संगीत के प्रणेता	36	10
प्रायोगिक			
IV.	हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत	35	30
V.	ताल एवं अलंकार	45	15
VI.	सुगम संगीत	40	15
	कुल	240	100

अध्ययन विधि (Scheme of Studies)

सिद्धांत अंक : 40

मॉड्यूल-1 : साधारण संगीत शास्त्र अंक : 18

प्रस्ताव : इस मॉड्यूल में हिंदुस्तानी संगीत का अर्थ और उसकी परिभाषा से शिक्षार्थी को अवगत कराया गया है। इस मॉड्यूल में राग और ताल के तत्वों, अध्ययन के स्वरूपों तथा स्वर-लिपि से संबंधित प्रमुख बातों और उनके क्षेत्रों का समावेश है। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं–

पाठ-1 : **हिंदुस्तानी संगीत के मूल पारिभाषिक शब्दों का परिचय**

(संगीत, नाद, श्रुति, स्वर, सप्तक, वर्ण, अलंकार आदि)

पाठ-2 : **राग के तत्व**

(थाट, राग, आरोह, अवरोह, पकड़, वादी, संवादी, गायन समय और जाति)

पाठ-3 : **ताल के तत्व**

(मात्रा, लय, बोल, ठेका, विभाग, सम, खाली और ताली)

पाठ-4 : **विधाओं का अध्ययन**

(ध्रुपद और धमार)

पाठ-5 : **स्वर-लिपि पद्धति**

(विभिन्न चिन्ह, संकेत और स्वर लिपि लेखन की विधि - भातखंडे स्वर लिपि पद्धति के अनुसार विभिन्न वंदिशों और तालों की स्वरलिपि लेखन)

मॉड्यूल-2 : हिंदुस्तानी संगीत (प्राचीन और मध्यकालीन) का संक्षिप्त इतिहास अंक : 10

प्रस्ताव : हिंदुस्तानी संगीत का इतिहास वैदिक युग से प्रारंभ होता है। इस मॉड्यूल में प्राचीन और मध्यकालीन हिंदुस्तानी संगीत का इतिहास वर्णित है। इसमें निम्नलिखित पाठ हैं।

पाठ-6 : **सामवेद के विशेष संदर्भ के साथ वेदों का संक्षिप्त अध्ययन**

पाठ-7 : **संगीत रत्नाकर का संक्षिप्त परिचय**

पाठ-8 : **संगीत पारिजात में निहित विषय-सामग्री का संक्षिप्त अध्ययन**

माड्यूल-3 : हिंदुस्तानी संगीत के प्रणेता अंक : 10

प्रस्ताव : इस मॉड्यूल का मुख्य उद्देश्य हिंदुस्तानी संगीत के उन महान व्यक्तियों के बारे में शिक्षार्थियों को परिचित कराना है, जिन्होंने हिंदुस्तानी संगीत के विभिन्न स्वरूपों को शानदार ऊंचाई दी है। इस मॉड्यूल में निम्नलिखित पाठ हैं:

पाठ-9 : संगीत के क्षेत्र में महान विभूतियों की जीवनी और उनका योगदान

(मानसिंह तोमर, तानसेन, सदारंग, अदारंग)

पाठ-10 : हिंदुस्तानी संगीत के प्रणेता

पं. विष्णु नारायण भातखंडे

पं. विष्णु दिगंबर पलुस्कर